My series of news reports exposes organized human trafficking network thriving across 105 villages of three tribal districts of Rajasthan - Udaipur, Banswara and Dungarpur, adjacent to the Gujarat border.

This story is outcome of relentless hard work of two years and reveals that every day children between the age of 08 and 15 years are made available to brokers for bidding in these villages.

The impact of the story was that for the first time a special cell was created in Kotra block of Udaipur district which is considered as an epicenter of child trafficking and Special Investigation Unit for Child and Women Crime was established at every police district across state.

After this expose, a special drive was launched by the Rajasthan police in January 1, 2020 and is till on. So far more than1000 kids have been

rescued. Immediately after the story, 134 kids were rescued in an joint operation by the Gujarat police and Rajasthan police from Surat.

The National Human Rights Commission and Rajasthan State Commission for Protection of Child Rights took cognizance of the stories and gave necessary directions to state government to curb human and child trafficking.

The chief minister of state Ashok Gehlot immediately took cognizance of the story and a high-level meeting of officials concerned with the child development and directed them to formulate policy to stop human trafficking in state. Also,extra check-posts have been created on the border areas of Gujarat and Rajasthan.

3 जिलों के 127 गांवों से मानव तस्करी पर दैनिक भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा

गांवों से बच्चे खरीदकर रोजाना दौड़ती हैं गुजरात की 500 जीपें...भास्कर ने 44 बच्चे 'खरीदे', पुलिस को सौंपे

बचपन खतरे में है

मानव तस्करी में राजस्थान नं. वन

गुजरात से सटे गांवों से खरीद कर ले जा रहे 200 बच्चे भास्कर ने छुड़वाए

मानव तस्करी कर रहे 300 से ज्यादा दलाल, 500 से ज्यादा जीपवाले

बच्चों की नीलामी में जाने वाली हर जीप से कोटड़ा थाने से गुजरती है

आनंद चौधरी | उदयपुर/ डूंगरपुर/ बांसवाड़ा

गुजरात से सटे राजस्थान के तीन जिलों उदयपुर, बांसवाड़ा और डूंगरपुर के गांवों में बच्चे बिक रहे हैं। रोज। उम्र 5 से 16 साल...कीमत 50 रुपए से 150 रुपए रोजाना। काम- जो चाहे कराओ। जगह-जहां चाहो ले जाओ। इनमें बच्चियां भी शामिल हैं। कई बच्चे अपाहिज होकर लौटे, कई बच्चे कफन में घरों को लौटे। तीनों जिलों के 127 गांवों में जाकर भास्कर ने मानव तस्करी के पूरे नेटवर्क का खुलासा किया। भास्कर टीम ने खुद को जोखिम में डालकर मानव तस्करी के दलालों से संपर्क किया। दलालों के मार्फत खुद 44 बच्चे खरीदे और पुलिस को सौंपा।

दैनिक भास्कर ने यह स्टिंग बचपन बचाने के लिए किया है। **नेशनल क्राइम ब्यूरो की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार मानव तस्करी में राजस्थान देश में पहले नंबर पर है। इसके बाद कोई रिपोर्ट नहीं आई है।** दूसरा चिंताजनक पहलू- बालश्रम में राजस्थान तीसरे स्थान पर है। प्रदेश में साढ़े आठ लाख बाल श्रमिक हैं। भास्कर ने 30 दलालों को कैमरे में कैद किया। दलालों ने बताया- 300 लोग बच्चों को गुजरात ले जाते हैं। इसके लिए गुजरात नंबर की 500 से ज्यादा जीपें इन तीनों जिलों में दौड़ रही हैं। **जीप मालिक को प्रति बच्चा 50 रुपए मिलता है, जिसमें वह 500 रुपए रोजाना पुलिस को देता है।** गुजरात सीमा से सटी अंतिम पुलिस चौकी मामेर में 26 नवंबर 2019 को भास्कर ने 26 बच्चे सौंपे। भास्कर ने 20 दिसंबर को फिर 18 बच्चे खरीदे और कोटड़ा थाना पुलिस को सौंपा। ...तस्करी जारी है।

कोटड़ा पुलिस का चेहरा तस्करों से ज्यादा भयावह

...क्योंकि, मानव तस्करों पर कार्रवाई के बजाय कोटड़ा थाना पुलिस भास्कर टीम और बच्चों को ही डराती रही

फोटो : अनिल शर्मा

तीनों जिलों से रोजाना 20 हजार से ज्यादा बच्चों और महिलाओं की तस्करी गुजरात के लिए होती है। शुक्रवार को भास्कर टीम ने गुजरात सीमा के पास मामेर गांव से 10 से 15 साल के 18 बच्चे खरीदे। सुबह 8 बजे इन बच्चों को लेकर कोटड़ा थाना पुलिस को सौंपा। ...लेकिन, बच्चों की तस्करी के खिलाफ काम करने के लिए जिम्मेदार बाल संरक्षण समिति व पुलिस का चेहरा भी बेनकाब हो गया। पुलिस ने दिनभर बच्चों से सवाल किए। भूखे-प्यासे थाने में बिठाए रखा। समिति से लेकर राज्य बाल संरक्षण आयोग तक को सूचित करने के बावजूद देर रात तक कोई भी सुध लेने नहीं पहुंचा।

भास्कर टीम से दलाल ने 9500 रु. लिए, 18 बच्चे दिनभर के लिए दिए

भास्कर टीम भूरी देभर गांव में दलाल सोहनलाल से मिली। खुद को गुजरात का फैक्ट्री संचालक बताया और बच्चों की डिमांड की। दलाल ने 10 से 15 साल उम्र के 18 बच्चे 9500 रुपए में दिनभर के लिए साथ भेज दिए।

सवाल : भास्कर ने 26 नवंबर को कोटड़ा थानाधिकारी धनपत सिंह को बताया था कि रोज जीपों में बच्चों को मानव तस्करी कर गुजरात ले जाते हैं। भास्कर ने शुक्रवार को फिर 18 बच्चे लाकर थाने को सौंपे। पुलिस ने तस्करों की जगह बच्चों व भास्कर टीम से सवाल किए। किसी दलाल को नहीं पकड़ा। कुछ समय पहले ही थानेदार धनपत का विवाह हुआ था। उन्होंने प्री-वेडिंग फिल्म बनाई थी जिसमें वर्दी पहने मंगेतर से घूस लेते नजर आए थे।

- **उदयपुर एसपी कैलाश विश्नोई कहते हैं- भास्कर ने आज हमें बताया है। इस पर पुलिस पुख्ता कार्रवाई करेगी। हमने 11 माह में जेजे एक्ट में बहुत कार्रवाई की हैं। भास्कर ने जो बच्चे सौंपे हैं, उसमें पुलिस की कमी रही है तो दूर करेंगे। बच्चों को सीडब्ल्यूसी को सौंपेंगे।**

थानेदार की धमकी- मैं ही सरकार हूं, जो चाहे करूंगा

शुक्रवार को कोटड़ा थाने को बच्चे सौंपने के बावजूद पुलिस मानव तस्करी रोकने की जगह भास्कर टीम और साथ देने वाले एक सामाजिक संगठन को ही डराने-धमकाने में

जुटी रही। कोटड़ा थानाधिकारी धनपत ने तो यहां कह दिया कि मैं ही यहां की सरकार हूं, मेरी मर्जी होगी वहीं करूंगा। कोटड़ा पुलिस दिनभर बच्चों को प्रताड़ित करने में जुटी रही। भास्कर ने अपने इस स्टिंग के संबंध में पहले ही पुलिस मुख्यालय को बता दिया था। मानत तस्करी रोधी यूनिट के अफसरों ने इस स्टिंग में सहयोग करने का लिखित आश्वासन दिया था। पुलिस मुख्यालय मुहिम में समर्थन कर रहा है, कोटड़ा थानेदार इसमें रोड़े अटकाते रहे।

भास्कर स्टिंग क्यों?

राजस्थान में हर साल 2500 से ज्यादा बच्चे गायब हो रहे हैं 2015 और 2016 में 18 वर्ष से कम उम्र के 782 लड़के और 1387 लड़कियां गायब हुईं। 2015 में 4951 महिलाएं भी गायब हुईं।

बालश्रम- जनगणना 2011 के अनुसार- बाल मजदूरी में राजस्थान का देश में तीसरा नंबर है। यहां 5 से 14 वर्ष के 8.5 लाख बच्चे बाल श्रमिक हैं।

भास्कर बिग स्टिंग में कल पढ़िए- गांवों में कैसे लगती है बच्चों की बोली, कैसे 8 से 15 साल के बच्चे चौखटियों पर हर रोज बिक रहे हैं

Translation of series of stories

Story 1:

Date of published: December 21, 2019

Bhaskar's biggest exposé on human trafficking in 127 villages of three districts

500 jeeps deployed in villages to traffic children to Gujarat; Bhaskar 'buys' 44 children, hand them over to police

Investigative reporter from India's leading Hindi daily -Dainik Bhaskar, Anand Choudhary, has been relentlessly working for the past two years to expose the organised human trafficking racket operating in the three tribal districts of Rajasthan - Udaipur, Banswara and Dungarpur villages, adjacent to the Gujarat border.

Choudhary's work can be said to be greater than CNN's investigative reporter Nima Elbagir, who exposed the slave trade market in Libya, because he has put his personal safety at risk to save children of vulnerable and weaker sections of the society. In this crusade, he has freed more than 1,000 children from human traffickers and even bought 44 children and handed them over to police. Choudhary in a series of articles in Dainik Bhaskar has exposed how human trafficking is rampant under the belly of police administration.

In more than 127 villages of Udaipur, Banswara and Dungarpur, everyday children including girls are sold for a price between Rs 50 and Rs 150. They can be taken to any place and made to work whatever their buyers want.

To expose the human trafficking network, the Bhaskar team, taking a huge personal risk, contacted brokers and through them bought 44 children, who were later handed over to the police.

Out of these 44 children, the Bhaskar team on November 29, 2019, handed over 26 to the Mamer police station, adjoining the Gujarat border and 18 to the Kotra police station.

During its sting operation, the Bhaskar team has talked to 30 brokers, who explained the modus operandi of flourishing illegal trade in detail. According to them, daily almost 300 children are taken to Gujarat. For this purpose, they have deployed 500 (SUVs) bearing Gujarat number plates across the three districts. The jeep owner is paid Rs 50 per child and he also pays Rs 500 daily to the police.

The most worrisome aspect is that according to the National Crime Record Bureau(NCRB),2017, Rajasthan was placed at the top as far as human trafficking is concerned. Since then, it has not published any report. Rajasthan's record on child labour is also not enviable as it is ranked third in the country.

Meanwhile, it is business as usual for human traffickers.

Bhaskar 'buys' 18 children from brokers for Rs 9,500 for a day

On December 20, the Bhaskar team also exposed the callousness attitude of the police and the Child Welfare Board. In these three districts, more than 20,000 children and women are trafficked to Gujarat daily.

It (the Bhaskar team) bought 18 children ranging in the age group of 10 and 15 years for

Rs 9,500 for a day from Mamer village, adjacent to Gujarat border and handed over them to the Kotra police station. However, the Bhaskar team was shocked by the callousness and casual approach of the police and the Child Welfare Board - the agency which supposed to prevent child trafficking. Children were handed over to the Kotra police station at 8 am and the entire day was spent in police questioning children without bothering to arrange food and water for thirsty and hungry children. As far as the child welfare bodies are concerned, the less said is better. Even after contacting the Rajasthan State Commission for Protection of Child Rights, there were no signs of any action until very late in the night.

Police official threatens Bhaskar team, says 'he is the government. Will do whatever he wants'

The most shocking aspect of the entire episode was the arrogant behaviour of Danpat, the in-charge of Kotra police station, who instead of taking immediate action, started intimidating and threatening the Bhaskar team and a social organisation, which helped the reporter. He said, "he is the government here and whatever will happen here, it will be according to his wish" and kept harassing children throughout the day. It may be mentioned here that the Bhaskar team had informed the police headquarters about its sting operation and the police's the anti-human trafficking had assured of its help in writing while the police headquarters is extending its full support in this crusade. Only Kotra police station in-charge is hindering the campaign.

Why Bhaskar did sting operation?

More than 25,000 children disappear every year in Rajasthan. In 2015 and 2016, 782 boys and 1387 girls under the age of 18 years had disappeared while in 2015 4951 women has gone missing.

According to NCRB 2017 report, Rajasthan tops the chart in Human trafficking across nation.

As per census 2011, the desert state ranks third in child labour in the country wherein more than 8.5 lakh children between the age of 5 and 14 are engaged in child labour.

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

कुल पृष्ठ 34 (रसरंग आज) **राजस्थान** मूल्य ₹ 5.00 | वर्ष 24, अंक 4, महानगर

dainikbhaskar.com जयपुर, रविवार, 22 दिसंबर, 2019 पौष, कृष्ण पक्ष-11, 2076 12 राज्य | 65 संस्करण

तापमान (डिग्री सेल्सियस)

	न्यूनतम	अधिकतम	आज का अनुमान न्यूनतम
जयपुर	10.1	23.6	10.0
अजमेर	11.3	22.8	11.0
दिल्ली	9.5	18.0	7.0
मुंबई	21.1	31.5	21.0

मानव तस्करी पर दैनिक भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा- बचपन के सौदागरों का क्रूर सच

भास्कर स्टिंग
बचपन बचाने के लिए

बच्चे चौखटियों पर रोज बिक रहे, कीमत 500 से 3 हजार रु. माह, हर मासूम पर 50 रु. दलाली

आनंद चौधरी | उदयपुर/डूंगरपुर/बांसवाड़ा. राजस्थान के आदिवासी जिलों उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा में हर दिन बचपन की बोली लगती है। स्कूल जाने की उम्र में इन बच्चों के हाथों में फावड़ा, गेंती, कुदाली थमा दी गई है। मानव तस्करी में लिप्त दलाल रोज बच्चों को श्रम की मंडियों में बेचते हैं। 8 से 15 साल तक के बच्चों की बोली लगाते हुए इनके चेहरे पर शिकन तक नहीं होती। हां, इनका कमीशन कटा तो चेहरे की रंगत उड़ जाती है। गुजरात व राजस्थान के 30 से ज्यादा दलालों को बच्चों की बोली लगाते भास्कर ने खुफिया कैमरे में कैद किया। बचपन के सौदागरों का सच दिखाने के लिए भास्कर ने इन्हीं के मार्फत 44 मासूमों का सौदा किया... यह स्टिंग बचपन बचाने के लिए है।

बोली लगी और आधे घंटे में बिक गए 8 से 15 साल के 44 मासूम

3 हजार रुपए माह में मिल गई 8 साल की छोटी

भास्कर रिपोर्टर खुद को फैक्ट्री मालिक बताकर दलाल के जरिए उदयपुर के आमलिया फला गांव की 8 साल की छोटी तक पहुंचा। दलाल ने बताया- ये कोई भी छोटा-बड़ा काम कर लेगी। तीन हजार रु. माह में मिलेगी। दलाल ने छोटी की पेशगी बतौर 500 रुपए लिए और काम पर भेजने का वादा किया।

सबसे सस्ता दला

कोटड़ा के 8 साल के दला की 50 रु. बोली लगी। दलाल ने 50 रु. दलाली ली। बोला- ऐसे 50 बच्चे भेज दूंगा।

गुड्डी लो, ऐसी 20 हैं

डूंगरपुर के टेंगरवाड़ा की 13 साल की गुड्डी को रोज 200 रु. में ले जा सकते हैं। दलाल बोला- गुड्डी जैसी 20 लड़कियां मिल जाएंगी, हर लड़की पर 50 रु. दलाली।

सौदे की शुरुआत : आदिवासी इलाकों में इन दलालों को मैट कहते हैं। इनकी सहमति के बिना कोई सौदा तय नहीं होता। उम्र और काम के हिसाब से कीमत तय होती है।

फिर सौदेबाजी : कहां जाना है...इस पर कीमत घटती-बढ़ती है। आसपास ही जाना है तो दलाली कम होती है। बाहर ले जाना है तो ज्यादा। दलाली 20 से लेकर 50 रुपए तक रोज है।

हर गांव में दलाल : हर गांव में एक या दो मैट मिले। ये रोज बच्चों-महिलाओं को ले जाते हैं। मजदूरी के दौरान कोई भी हादसा होता है तो इनकी कोई जिम्मेदारी नहीं होती। -राजस्थान पेज भी पढ़ें

दलाल बोले- हर जगह, हर काम के लिए बच्चा मिलेगा, बस! हमारा कमीशन बढ़ेगा

दलाल वस्ता
गांव : खेड़ब्रह्म, गुजरात
दलाली हर महीना
27,000

रणछोड़ भाई
गांव : खेड़ब्रह्म, गुजरात
दलाली हर महीना
22,500

हिम्मत सिंह
गांवः बिच्छीवाड़ा, डूंगरपुर
दलाली हर महीना
25,000

भरतलाल भाई
गांव : फुटन उदयपुर
दलाली हर महीना
45,000

प्रताप सिंह
गांव : खैरवाड़ा उदयपुर
दलाली हर महीना
18,000

राजूलाल
गांव : आमलिया, उदयपुर
दलाली हर महीना
30,000

भास्कर स्टिंग इसलिए

राजस्थान में हर साल 2500 से ज्यादा बच्चे गायब हो रहे हैं

2015-2016 में 18 वर्ष से कम उम्र के 782 लड़के व 1387 लड़कियां गायब हुए। 2015 में 4951 महिलाएं भी गायब हुईं। जनगणना 2011 के अनुसार- **बाल मजदूरी में प्रदेश का देश में तीसरा नंबर है।** यहां 8.5 लाख बच्चे बाल श्रमिक।

भास्कर इम्पैक्ट

मानव तस्करों पर कार्रवाई शुरू, कोटड़ा में खोली मानव तस्करीरोधी यूनिट

3 जिलों के 127 गांवों से मानव तस्करी पर दैनिक भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा
गांवों से बच्चे खरीदकर रोजाना दौड़ती हैं गुजरात की 500 जीपें...भास्कर ने 44 बच्चे 'खरीदे', पुलिस को सौंपे
मानव तस्करी में राजस्थान नं. वन

21 दिसंबर को प्रकाशित।

जयपुर | गुजरात से सटे राजस्थान के तीन जिलों उदयपुर, बांसवाड़ा व डूंगरपुर में बच्चों की खरीद-बिक्री को लेकर शुक्रवार को किए गए स्टिंग के बाद शनिवार को बचपन बचाने के लिए चौतरफा पहल हुई। सीएम ऑफिस से लेकर बाल आयोग, बाल कल्याण समिति, उदयपुर कलेक्टर और कोटड़ा उपखंड मजिस्ट्रेट तक ने गंभीरता दिखाई। बाल आयोग ने पहली बार मानव तस्करी प्रभावित हर ब्लॉक के लिए डेढ़-डेढ़ लाख रु. आवंटित किए हैं। कोटड़ा में मानव तस्करीरोधी यूनिट की स्पेशल शाखा खोली गई है। राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने मानव तस्करों के खिलाफ ठोस कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के संगठन बचपन बचाओ आंदोलन की एक टीम रविवार को कोटड़ा पहुंचकर मानव तस्करी के हालात का जायजा लेगी। उदयपुर में जिला एवं सेशन न्यायधीश रवीन्द्र कुमार माहेश्वरी ने पुलिस अधिकारियों, कारखाना संचालकों, बच्चे मुहैया कराने वाले तस्करों के खिलाफ कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। एसपी कैलाश चन्द्र बिश्नोई से जवाब तलब भी किया है। उधर, भास्कर के खुलासे के बाद सेल्टर होम में ठहराए गए बच्चों को शनिवार को बाल कल्याण समिति उदयपुर की टीम ने परिजनों को सुपुर्द कर दिया। -पेज 12 भी पढ़ें

3 जिलों के 127 गांवों से मानव तस्करी पर दैनिक भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा

बचपन खतरे में है

मानव तस्करी में राजस्थान नं. वन

भास्कर ने एक महीने में दो बार पुलिस को सौंपे 97 बच्चे, कार्रवाई की जगह मानव तस्करों को बचाती रही पुलिस

- हर बच्चे पर 50 रु. दलाल और 50 रु. जीप चालक के
- पुलिस को भी हर जीप से 500 रुपए मिलते हैं

भास्कर न्यूज | उदयपुर/ डूंगरपुर/बांसवाड़ा

प्रदेश के 3 जिलों उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा में बचपन को रौंदकर लिखी जा रही विकास की इस इबारत का चेहरा बहुत घिनौना है। भास्कर ने तीनों जिलों के 127 गांवों में जाकर मानव तस्करी का खुलासा किया। टीम दो साल में 44 बच्चे खरीदकर पुलिस को सौंप चुकी है लेकिन हर बार पुलिस का चेहरा तस्करों को बचाने वाला ही रहा है। राजस्थान की गुजरात सीमा से सटी अंतिम पुलिस चौकी मामेर में हमने 4 दिसंबर 2017 और 26 नवंबर 2019 को 26 बच्चे सौंपें। इस पर भी मानव तस्करी नहीं रुकी तो 20 दिसंबर को फिर से 18 बच्चे कोटड़ा थाने में सौंपे, लेकिन पुलिस ने सर्दी में कई घंटे बच्चों को भूखे-प्यासे थाने के बाहर लाइन में बिठाए रखा।

दलालों के जरिये जीप में ठूंसकर गुजरात भेजे जाते हैं ये बच्चे

सीमावर्ती हर गांव में दलाल हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में मैट कहा जाता है। गुजरात के बड़े किसान व फैक्ट्री मालिक इन्हीं के जरिये बच्चों का सौदा करते हैं। **मैट को प्रति बच्चा 20 से 50 रु. मिलते हैं। गुजरात नंबर की जीपों में भरकर बच्चों को खेतों व फैक्ट्रियों तक ले जाया जाता है। जीप मालिक को प्रति बच्चा 50 रु. मिलता है। इसमें वह 500 रु. पुलिस को देता है।** कोटड़ा, बिच्छीवाड़ा, खैरवाड़ा, झाड़ोल व फलासिया में गुजरात नंबर की करीब दो हजार से ज्यादा जीपें हैं। इनमें ज्यादातर जीपें बच्चों व महिलाओं की तस्करी में लिप्त हैं।

26 नवंबर 2019, मामेर चौकी

20 दिसंबर 2019, कोटड़ा थाना

इन दो तस्वीरों से समझिए पुलिस को असली चेहरा

ये दो तस्वीरें पुलिस का असली चेहरा बताती हैं। **पहली तस्वीर** 26 नवंबर को मामेर पुलिस चौकी की है जहां भास्कर टीम ने मामेर पुलिस के साथ मिलकर गुजरात ले जाए जा रहे 79 बच्चे गाड़ियों से मुक्त कराए, लेकिन सूचना के बावजूद कोटड़ा थानाप्रभारी की अनदेखी के कारण सभी जीप चालक और मानव तस्करी के खेल में लिप्त दलाल भागने में कामयाब हो गए। **दूसरी तस्वीर** शुक्रवार 20 दिसंबर को कोटड़ा थाने की है जहां भास्कर ने दलालों के जरिए 18 बच्चे खरीदकर पुलिस को सुपुर्द किए, लेकिन पुलिस ने सर्दी में कई घंटे तक बच्चों को भूखे-प्यासे थाने के बाहर लाइन में बिठाए रखा।

बचपन तो मासूम है : राजस्थान के गांवों से दिहाड़ी पर लेकर गुजरात की श्रम मंडी में बेचते हैं दलाल...फिर भी मुस्कुराता है

उदयपुर की कोटड़ा तहसील में राजस्थान बॉर्डर के अंतिम छोर पर बसे गांवों में बचपन रोज नीलाम होता है। हर गांव में सक्रिय दलाल इन बच्चों को भेड़-बकरियों की तरह गाड़ियों में ठूंसकर गुजरात ले जाते हैं। राजस्थान की गुजरात सीमा पर अंतिम पुलिस चौकी मामेर व गुजरात की अंतिम पुलिस चौकी खड़ब्रह्म के सामने से जीपों में भरे ये हजारों बच्चे रोज गुजरते हैं, लेकिन न तो मानव तस्करी निरोधी यूनिट और न पुलिस ने कभी इस खेल पर नकेल कसने का प्रयास किया। एक-एक जीप में 40-45 बच्चे ठूंस-ठूंसकर थानों के सामने गुजरते हैं, लेकिन पुलिस को नजर नहीं आता।

इधर, भास्कर के खुलासे के बाद जागा प्रशासन

- गुजरात से सटे इलाकों में चलेंगे रोजगार के ट्रेनिंग सेंटर, जागरूकता अभियान चलाएंगे

मानव तस्करी के गढ़ उदयपुर के कोटड़ा में गुजरात की सीमा से सटे गांवों में रोजगार परक ट्रेनिंग सेंटर चलाए जाएंगे। भास्कर के खुलासे के बाद शनिवार को कोटड़ा पहुंची बाल कल्याण समिति ने स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार मुहैया कराने के लिए ये सेंटर खोलने के निर्देश दिए। समिति के उदयपुर जिलाध्यक्ष ध्रुव कुमार कविया ने बताया कि कुछ बच्चों ने गुजरात काम पर जाने की बात स्वीकारी है। ऐसे में उनके माता-पिता को कानूनी तौर पर पाबंद किया गया है कि भविष्य में नाबालिग बच्चों को मजदूरी के लिए गुजरात न भेजें। समिति ने कोटड़ा उपखंड मजिस्ट्रेट टी शुभमंगला को मानव तस्करी के खिलाफ जनजागरूकता अभियान चलाने को कहा है।

- एक संगठन ने दो माह में मुक्त कराए 120 बच्चे, 15 केस दर्ज

उदयपुर संभाग में मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी के हालात ऐसे हैं कि 'बचपन बचाओ' आंदोलन के सहयोगी संगठन श्री आसरा विकास संस्थान ने दो माह में विभिन्न थाना क्षेत्रों से मानव तस्करी और बंधवा मजदूरी के लिए लाए गए 120 बच्चों को मुक्त कराया है। संगठन की ओर से की गई इस कार्रवाई में 16 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। संभाग के अलग-अलग पुलिस थानों में इस संबंध में 15 मुकदमे दर्ज कराए गए हैं।

Story 2:

Everyday kids are been sold at crossroads between Rs 500 to Rs 3,000 per month, Rs 50 commission per kid

In the second article of series on human trafficking, Anand Chodhary unearthed a market where children are sold like animals. In the tribal districts of Udaipur, Banswara and Dungarpur, children of school going children are auctioned to the highest bidder. Every day children between the age of eight and 15 years are made available to brokers for bidding. During the bidding there is sign of remorse or regret on the faces of bidders as they are concerned about their commission.

The Bhaskar team led by Choudhary not only recorded on video tape more than 30 brokers doing the bidding but also bought 44 children through them exposed the racket.

How the deal is struck

In the tribal-dominated areas these brokers are called 'met'. No deal can be finalised without their consent and they only decide the price and work. Their commission also fluctuates depending where the girl or boy is to be taken. If the place is nearby then, commission is just Rs 20 and if the place is faraway then the commission is Rs 50. Every village has at least one or two 'met' who take away boys and girls for work. However, they are not responsible if any mishap or accident takes place during the course of work.

8-year-old girl goes for Rs 3,000 per month

Posing himself as a factory owner contacted a broker and finalised a deal to buy 8-year-old Choti of Amalia Fala village of Udaipur for Rs 3,000 per month. The broker, who took Rs 500 as advance, promised to deliver the girl, who he said could any manual work.

Cheapest 8-year-old Dala goes for Rs 50

Eight-year-old Dala of Kotdwara was auctioned off for just Rs 50. The broker, who took Rs 50 as commission, said he could deliver 50 such boys.

13-year-old Duddi available **Rs 200 per day**

13-year-old Duddi of Dungarpur;s Tekwara village could be bought for R 200 per day. The broker said he can arrange 50 girls like her but will charge Rs 50 per girl as commission.

How much brokers earn

1. Vasta, resident of Khedbrahma village is Guajarat earns Rs 27,000 per month

2. Ranchad Bhai, also resident Khedbrahma village is Guajarat earns Rs 22,500 per month.

3. Himmat Singh of Vichwara village, Dungarpur, earns Rs 25,000 per month.

4. Pratap Singh of Kherwara, Udaipur, earns Rs 18,000 per month.

5. Bhartlal Bhai of Photan, Udaipur, earns Rs 45,000 per month.

6. Raju Lal of Amaliya village in Udaipur, earns Rs 30,00.

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

आज नो निगेटिव अखबार

तापमान (डिग्री सेल्सियस)	न्यूनतम	अधिकतम	आज का अनुमान न्यूनतम
जयपुर	9.0	23.5	9.0
अजमेर	11.4	23.1	10.0
दिल्ली	7.4	14.6	7.0
मुंबई	22.2	33.0	22.0

जयपुर, सोमवार, 23 दिसंबर, 2019 | पौष, कृष्ण पक्ष-12, 2076 | 12 राज्य | 65 संस्करण

मानव तस्करी पर दैनिक भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा- बच्चों की जिंदगी के सभी रंग छीन लिए

भास्कर स्टिंग
बचपन बचाने के लिए

100 रु. की दिहाड़ी के लिए मानव तस्करों के साथ गुजरात गए राजस्थान के बच्चे, अपाहिज होकर लौटे

आनंद चौधरी. उदयपुर/डूंगरपुर/बांसवाड़ा | राजस्थान में बचपन सुरक्षित नहीं है। प्रदेश में 10 हजार से ज्यादा बच्चे गायब हैं। घर ना लौट पाने वाले इन बच्चों में आधे से ज्यादा मानव तस्करी के शिकार हुए हैं। उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा जिलों से हर दिन करीब 15 हजार बच्चे दलालों के जरिये गुजरात भेजे जाते हैं। कुछ दिनों में लौट आते हैं। दर्दनाक पहलू यह है कि इनमें से कई बच्चे लौटकर ही नहीं आए। कुछ अपने हाथ-पांव और शरीर के हिस्से गंवाकर लौटे तो कुछ सफेद कफन में लिपटकर। भास्कर ने इन 3 जिलों के 127 से ज्यादा गांवों में पहुंचकर मानव तस्करी का सच जाना। कम उम्र में अपाहिज हुए **बच्चों की ये दर्दनाक कहानियां सिर्फ संवेदना नहीं, सुधार के लिए हैं...ताकि बचपन बचाया जा सके।**

गर्म तेल, फिर भट्टी में भुना भूरीलाल

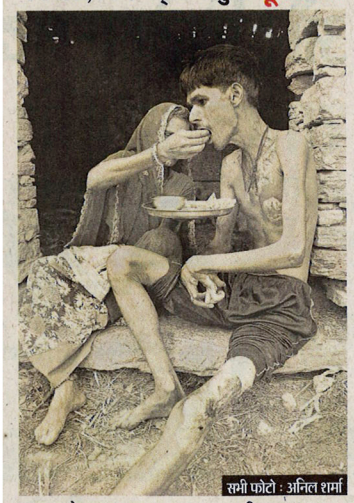

सभी फोटो : अनिल शर्मा

उदयपुर के सायरा का 21 साल का भूरीलाल। 9 साल पहले दलाल बिना घरवालों को बताए 100 रु. दिहाड़ी पर गुजरात के बापी में नमकीन के कारखाने ले गया था। मार्च 2011 में गर्म तेल की कड़ाही में गिर गया। आधा शरीर जल गया। हाथ टेढ़े हो गए। दोनों पैरों की अंगुलिया कट गईं। पिता ने बकरियां बेचकर 5 लाख रु. में इलाज कराया। इलाज जारी है।

ऑयल मशीन खा गई मंगली का पैर

उदयपुर के पटेला फला की मंगली दो साल पहले दिहाड़ी पर गुजरात के मेहसाणा गई थी। मालिक ने **15 साल की मंगली** को ऑयल मिल की मिट्टी निकालने में लगाया। तभी किसी ने मशीन चालू कर दी। मंगली मशीन में फंस गई। किसी तरह निकाला, पर पैर फंस गया। एक माह भर्ती रही। पैर कटने से शादी भी नहीं हुई। कृत्रिम पैर पर थोड़ा बहुत चल-फिर लेती है।

तीन बार काटा इंदिरा का हाथ

बांसवाड़ा जिले के टांडी बड़ी की इंदिरा (15) सूरत में निर्माण मजदूरी में गई थी। पिछले साल दिवाली से 3 दिन पहले बिल्डिंग में छिड़काव करते वक्त करंट लगा। पहले हथेली के पास से हाथ काटा। फिर कोहनी के नीचे से... फिर भी ठीक नहीं हुई तो कोहनी के ऊपर से हाथ काट दिया। 10वीं में पढ़ने वाली इंदिरा की पढ़ाई छूट गई। रिश्ता हो चुका था, वो भी टूट गया।

फैक्ट्री में हाथ कटे, लाचार चूनाराम

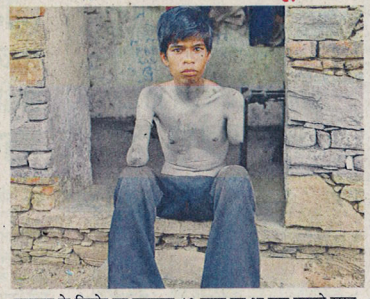

उदयपुर के निकोर का चूनाराम 10 साल का था जब कमाने सूरत गया। फैक्ट्री में दोनों हाथ कट गए। पुलिस के मुताबिक पटरियों के पास बेहोश मिला। पांच साल से वह न कपड़े पहन पाता है न खाना-पानी ले पाता है। मां-बाप मजदूरी पर चले जाते हैं तो पड़ोसी को बुलाकर पानी पीता है। इलाज पर इतना पैसा खर्च हो गया कि घर की दीवारें बनी, मगर छत नहीं पड़ी।

अधूरा धूलाराम : करंट से शरीर झुलसा, होटलवाले ने बकाया मजदूरी भी नहीं दी

9 साल पहले कोटड़ा के रणेजी का धूलाराम (18) गुजरात के जसवंतगढ़ के होटल पर काम करने गया था। करंट लगने से दोनों घुटने, सीना व बायां हाथ झुलस गया। एक हाथ पूरा काटना पड़ा। होटल मालिक ने न इलाज कराया और ना ही बकाया मजदूरी। धूलाराम फिर गुजरात में है, होटल में काम कर रहा है।

भास्कर स्टिंग इसलिए

राजस्थान में हर साल 2500 से ज्यादा बच्चे गायब हो रहे हैं बालश्रम में देश में राजस्थान तीसरा। 8.5 लाख बाल मजदूर।

Story 3:

Gone to Gujarat for daily wages of Rs 100, children return home brutalized and handicapped for life

In the third article of his series on human trafficking, Anand Choudhary has brought to light the poignant story of children who were sold for manual labour.

More than 10,000 children have disappeared from Rajasthan, out of which 50 per cent, who have not returned home, have been victims of human traffickers.

The most distressing aspect of this human tragedy is that the few 'lucky' ones who have returned home have been brutalized, traumatized and suffered such physical injuries that they have made handicapped for life.

Heart-wrenching of those who returned home.

1.Bharulal: A resident of Saharia village in Udaipur, 21-year-old Bharulal was sold about nine years ago through a broker to work in a snack-making factory in Gujarat for daily wages of Rs 100. In March 2011, during that course of work Bharulal fell into a large of wok of boiling oil and not only suffered 50 per cent burns but also fractured his both hands. Because of the severity of burns, fingers of his both feet had to amputated. The father had to sell his livestock for Rs 5 lakh for his treatment, which is continuing.

2. Mangli: About two years ago 15-year-old Mangli of Patela Fala village in Udaipur, was hired by an oil factory in Mehsana (Gujarat) for cleaning the machinery. One day while Mangli was cleaning the machine, somebody switched

on the machine in which Mangli was stuck. After a lot of efforts she was pulled out but her both limbs were crushed. After being hospitalised for more than a month, her limbs had to be amputated. Today, she is able to walk a bit with the help of artificial limbs but her marriage prospects have been completely snuffed out.

3. Indira: 15-year-old Indira of Dadi Badi village in Banswara was hired as a construction worker in Surat, Gujarat. Just a few days before Diwali last year, while working she suffered an electric shock, which injured her hand. First, the hand was amputated from the wrist, then elbow and this also not helped, her arm had to be amputated from above the elbow. Indira was studying 10 class and was engaged. The tragedy has shattered an innocent girl's life. She had to

discontinue her studies and her engagement was also broken.

4.Chunaram: 10-year-old Chunaram of Nikaro village in Udaipur has gone to Surat to work in a factory. His both hands were crushed during the work. The police found him lying unconscious near a railway track. For the past five years, he has been leading a miserable life. Due to amputation of both hands, he can't eat, drink or wear clothes on his own. When parents, who are manual labourers, go for work, Chunaram had to depend on neighbours to even drink water. His treatment has taken a heavy toll on the family, which lives in a house without a roof.

5. Dhuloram: Nine-year-old Dhuloram of Ranaji village in Kotdwara has gone to work in a hotel in Jaswantgarh (Gujarat). During work, he

suffered an electric shock, which burnt his knees, chest and left hand, which had to be amputated. The owner hotel neither paid his dues nor money for his treatment. He is working in a hotel in Gujarat.

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

राजस्थान

जयपुर, मंगलवार, 24 दिसंबर, 2019 | पौष, कृष्ण पक्ष-13, 2076 | 12 राज्य | 65 संस्करण

मानव तस्करी पर सबसे बड़ा खुलासा- छोटी-सी कमाई में बच्चों ने जान गंवाई

भास्कर स्टिंग
बचपन बचाने के लिए
क्योंकि मानव तस्करी में नंबर 1 है राजस्थान

हंसते-खेलते बच्चों को कमाने ले गए थे मानव तस्कर, घरवालों को उनकी लाशें-तस्वीरें ही मिलीं

आनंद चौधरी | उदयपुर/डूंगरपुर/बांसवाड़ा

मानव तस्करी के कई चेहरे हैं, लेकिन सबसे दर्दनाक चेहरे से आज हम नकाब हटा रहे हैं। दैनिक भास्कर ने उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा जिले के कई गांवों में जाकर जाना कि कैसे मानव तस्कर जीवन से खेल रहे हैं। ऐसे कई गांव हैं जहां तस्कर हंसते-खेलते बच्चों को कमाने के लिए अपने साथ ले गए थे, लेकिन वे लौटकर नहीं आए। गरीब आदिवासी परिवारों के इन बच्चों में से कोई लौटा भी तो कफन में लिपटा हुआ। कई की लाश भी नहीं मिली। कुछ बचा है तो सिर्फ इनकी तस्वीरें। इन बच्चों की बाट जोहते सैकड़ों बूढ़े मां-बाप की आंखें इंतजार में पथरा गई हैं। एनसीआरबी के आकड़ों के अनुसार प्रदेश में हर साल 6-7 हजार बच्चे और महिलाएं गायब होते हैं। अकेले उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा में यह आंकड़ा 3 हजार के करीब है। मानव तस्करों के चंगुल में फंसकर ये जाते हैं लेकिन लौटकर नहीं आते।

राजस्थान में हर साल 2500 से ज्यादा बच्चे गायब हो रहे हैं

- 2015 में 18 वर्ष से कम उम्र के 782 लड़के व 1387 लड़कियां गायब हुईं।
- 2015 में ही गायब होने वाली महिलाओं की संख्या 4951 है।
- 2016 में 18 वर्ष से कम उम्र के 2526 बच्चे लापता।

मजदूर बने कई बच्चे अपंग लौटे, कई की लाशें घर भेज दी गईं... कई बच्चों का आज भी इंतजार

सभी फोटो : अनिल शर्मा

गुजरात में मजदूर बनकर गई थी टमी, रंबा और बदी, कुएं में जिंदा दफन हो गई

उदयपुर के ऋषभदेव ब्लॉक में स्थित है पटेला फला गांव। यहां की टमी, रंबा व बदी गुजरात के गणेशपुरा के पास सुभासन गांव में खेत पर मजदूरी करने गई थी। खेत के मालिक ने कुएं की पाल पर बनाई गई झोपड़ी में तीनों बच्चियों को सुला दिया। रात में पूरा कुआं जमीन में धंस गया और तीनों बच्चियां भी कुएं में समा गईं। तीन दिन बाद तीनों की लाश मिली। खेत मालिक ने तीनों के घरवालों को जेल करवाने की धमकी देकर बिना मुआवजा दिए भगा दिया। रंबा के पिता नानालाल बेटी के गम में जैसे पागल हो गए हैं। टमी के भाई ईश्वरलाल और रंबा के पिता नानालाल का भी यही हाल है।

खुद का बेटा आठ साल से नहीं मिला, दूसरे का लाल ढूंढ लाए

उदयपुर जिले के क्यारा खेत गांव चमनाराम 12 साल की उम्र में गुजरात के राजकोट में होटल पर काम करने गया था। पास के ही गांव का एक व्यक्ति 3 बच्चों के साथ चमनाराम को वहां ले गया था। 8 साल से चमनाराम का कोई पता नहीं है। अनपढ़ आदिवासी परिवार पहले नजदीकी कस्बे में भी नहीं गया। बेटे की तलाश के लिए बूढ़ी मां कमली बाई व पिता भगाराम दर्जनों बार गुजरात और उदयपुर के चक्कर लगा चुके हैं। इस दौरान खुद का बेटा तो कहीं नहीं मिला लेकिन रीछवाड़ा गांव के एक बच्चे को ढूंढ़कर उसके माता-पिता को सौंप दिया।

भगवती गर्मी की छुट्टी में पैसे कमाने गया था, कफन में लौटा

उदयपुर की रावछ पंचायत के वेलू खेत का भगवती(10) इसी साल 25 मई को गुजरात के बोराड़ में कमाने गया था। वह घरवालों को बिना बताए आदिवासी होस्टल से गया था। 29 जून को पिता लालाराम के पास फोन आया कि बच्चे के चोट लगी है। उसी दिन शाम 7 बजे गुजरात से आए लोग उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे पर पिता को बेटे का शव सौंपकर लौट गए। लालाराम व उनकी पत्नी थवरी बाई बेटे की फोटो, किताबें, स्कूल बैग और कपड़ों को सीने से लगाकर रोते रहते हैं। पिता को दबंगों ने इतना डरा दिया कि वह मुकदमा भी दर्ज नहीं करा पाया।

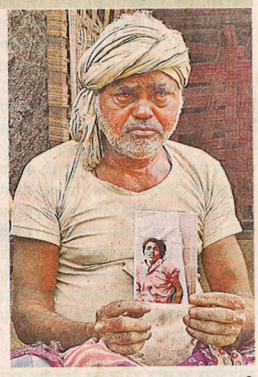

विजय ट्रेन से कटकर जान गई, घरवालों को लाश भी नहीं मिली

बांसवाड़ा के मस्का महुड़ी का विजय 15 साल की उम्र में गुजरात के बाडोली में कमाने गया था। गांव के नजदीक का ठेकेदार उसे ले गया था। पिछले साल दिवाली के दिन ट्रेन से कटकर मौत हो गई। 7 दिन शव मुर्दाघर में रख पुलिस ने अंतिम संस्कार कर दिया। घरवाले 15 दिन तक बेटे को ढूंढते रहे। 16 दिन बाद पता चला कि उसकी मौत हो गई। न ठेकेदार ने बताया न मालिक ने। पिता हलिया व मां बीनू बेटे की याद में रोते हैं। पास के गांव की नर्बदा से विजय की सगाई हुई थी। विजय ने नर्बदा का नाम अपने हाथ पर गुदाया था। इसी से लाश की शिनाख्त हुई।

Story 4:

Lively children went to earn extra buck but some of them returned with bodies covered in shrouds and some never returned

In the fourth article of the series, Anand Choudhary brings out the human tragedy unfolding in the tribal areas of Udaipur, Banswara and Dholpur, where hapless parents sell their children for a paltry sum and in return receive their bodies covered in a shroud and bodies of some of them have been never found. What is left with them are pictures of their loved ones, who they will never see again.

The most heart-rendering scenes can be seen in the villages of Udaipur, Banswara and Dholpur, where the human traffickers dope vulnerable and economically weak people with the promise of giving employment to their children. But, instead of receiving money from them, parents even don't know their whereabouts. Some of them get bodies of their dead children while others even don't get

this. They live on memories of children and their photographs in the hope that one day they will return or they will know their whereabouts. But for some the wait is endless. The gloom on their faces and sorrow in eyes tells a tale of which can bring tears to anybody's eyes.

According to NCRB, between 6-7,000 children, including women disappear from Rajasthan every year, in which Udaipur, Banswara, Dholpur account for more than 3,000.

Three girls from the same village buried alive as well caves in

Tambi, Raba and Badi of Rishabdev block in Patela Fala village of Udaipur had gone to Sobhasan village near Ganeshpura in Gujarat to work as manual labourers at an agricultural farm. There they were made to in huts, which were adjacent to a well. One night the well caved in, and all three friends were buried alive under the debris. Their bodies were pulled out after days and the farm owner did not

pay any compensation and even threatened the girls' parents of sending them to jail. Raba's father Nanalal in his grief has lost his mental balance. Same is the condition of fathers of the other two girls.

Search for their lost son yields missing son of another family

Kamli Bai and Bhagaram's search for their lost son proved a blessing in disguise for another family whose son was also missing. Their son Chamanaram at the age of 12 was taken away from their village Kavera Khet in Udaipur to work Rajkot in Gujarat to work in a hotel. For the last 8 years, they have not heard from their son. Aged and uneducated couple first tried to look for their son in nearby villages but in vain. Then they made several trips to Udaipur and Gujarat without any success. But in the process, they found a missing son of a family of Richwara village, which they handed over to the family.

Went to earn money in the summer holidays, came back his body

Bhagwati, 10, a student at Adivasi hostel wanted to make extra money during the summer holiday. A resident of Bhulo Khet village in Udaipur, Bhagwati, without informing his parents went work in Vadodara (Gujarat) on May 25, 2019. On 29 June, his father Lalaram got a phone, informing that his son has been injured. The same around 7pm, some people from Gujarat came and handed over his son's body on Udaipur-Ahmedabad highway and returned to Gujarat. Bhagwati's father is so afraid of human traffickers that he did not even file a case against them. His mother Thavri Devi keeps crying, holding his photo, schoolbag and books.

Ran over by train, Vijay was cremated by the police

The 15-year-old Vijay of Maska Mahudi village in Banswara had to Bardoli (Gujarat) as a causal worker with a contractor of a nearby village. In 2018 on the day of Diwali he was run over by a train. For 7 days his body was lying in the morgue and finally, the police cremated him. His aged parents kept looking for him but there was no sign of contractor who took Vijay along with him nor of the person where Vijay was employed. His body was identified by name of his fiancee Narbada, which he had engraved on his hand.

भास्कर स्टिंग के बाद मानव तस्करों के खिलाफ पहली बार संयुक्त अभियान

मानव तस्करों पर गुजरात व राजस्थान पुलिस की अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई, सूरत से छुड़ाए 134 बच्चे

दलाल और नियोक्ता नामजद, गिरफ्तारी होगी

क्राइम रिपोर्टर | उदयपुर

मानव तस्करी को लेकर भास्कर स्टिंग के बाद राजस्थान और गुजरात पुलिस ने मिलकर मानव तस्कर गिरोहों पर रविवार को अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई की। रविवार अलसुबह गुजरात के सूरत के एक साड़ी उद्योग में छापा मारकर 134 बच्चों को रेस्क्यू किया गया। इनमें 125 बच्चे राजस्थान और 9 बच्चे झारखंड, उत्तरप्रदेश व बिहार के रहने वाले हैं। उदयपुर की मानव तस्करी विरोधी यूनिट और गुजरात पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई के दौरान दलाल और नियोक्ता को नामजद कर लिया। इनकी जल्द ही गिरफ्तारी होगी। रविवार को उदयपुर व गुजरात पुलिस ने सूरत के पूणा गाम थाना क्षेत्र की सीताराम सोसायटी में 3 घंटे तक कार्रवाई कर इन बच्चों को मुक्त कराया। बच्चों को तीन बसों में उदयपुर लाया गया। यहां दूसरे राज्यों के 9 बच्चों को सूरत बाल कल्याण समिति में रखा गया है। दो दिन की रैकी के बाद स्थान चिह्नित कर यह कार्रवाई की गई।

भास्कर ने किया था बच्चों की मंडी का पर्दाफाश

हंसते-खेलते बच्चों को कमाने ले गए थे मानव तस्कर, घरवालों को उनकी लाशें-तस्वीरें ही मिलीं

100 रु. की दिहाड़ी के लिए मानव तस्करों के साथ गुजरात गए राजस्थान के बच्चे, अपाहिज होकर लौटे

बच्चे चौखटियों पर रोज बिक रहे, कीमत 500 से 3 हजार रु. माह, हर मासूम पर 50 रु. दलाली

3 जिलों के 127 गांवों से मानव तस्करी पर डीबी भास्कर का सबसे बड़ा खुलासा

गांवों से बच्चे खरीदकर रोजाना दौड़ती हैं गुजरात की 500 जीपें...भास्कर ने 44 बच्चे 'खरीदे', पुलिस को सौंपे

भास्कर ने सबसे पहले 21 दिसंबर को 3 जिलों के 127 गांवों में मानव तस्करी का खुलासा किया था। इसके बाद लगातार 24 दिसंबर तक खबरें प्रकाशित कर बताया था कि किस तरह बच्चों की खरीद-बिक्री के लिए मंडियां लगती हैं और 8 से 15 साल के बच्चों को 50 से 500 रु. तक की दिहाड़ी पर दलाल गुजरात के उद्योगों के लिए उपलब्ध कराते हैं। भास्कर ने ऐसे 44 बच्चे खरीदकर पुलिस को भी सौंपे थे।

गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा था 4 राज्यों का बचपन

सूरत से छुड़ाए गए बच्चे चार राज्यों के हैं। राजस्थान के उदयपुर के 78, राजसमंद के 39,पाली के 2, नागौरके 4, झुंझुनूं व अजमेर के 1-1 तथा 9 बच्चे झारखंड, यूपी व बिहार के हैं।

सभी बच्चे एक जगह मिलें इसलिए सुबह 5 बजे कार्रवाई : एसपी

उदयपुर एसपी कैलाशचन्द्र बिश्नोई ने बताया कि दलाल और काम करवाने वाले नियोक्ताओं के नाम सामने आए हैं। बच्चों से बातचीत की जाएगी और फिर केस दर्ज कर दलालों और नियोक्ताओं की गिरफ्तारियां होंगी। अल सुबह 5 बजे ऑपरेशन का मकसद यही था कि सभी बच्चे एक साथ एक ही जगह मिल जाएं।

इधर, झोलाछापों पर दूसरे दिन भी कार्रवाई, 71 पकड़े

- भास्कर स्टिंग के बीच पुलिस के छापे जारी, दो दिन में 302 झोलाछाप पकड़े जा चुके।
- चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा ने कहा कि प्रदेश में एक भी झोलाछाप नहीं रहेगा।

-पढ़ें राजस्थान पेज

संपादकीय

कहां है साझा मूल्यों की नींव पर खड़ा हमारा राष्ट्रवाद?

राजस्थान के उदयपुर जिले के पटेला गांव में गरीबी की मार झेल रही मंगली गुजरात के मेहसाणा में ऑइल मिल में 100 रुपए दिहाड़ी पर काम करने गई थी। मशीन में पैर फंसा, जिसे अस्पताल में काटना पड़ा। अपंग होकर वापस घर लौटी। अब उसे कोई दिहाड़ी पर भी नहीं रखता। देश में बाल मजदूरी गैरकानूनी है, काम करते वक्त पैर कटने पर मालिक द्वारा भारी मुआवजा देने का कानून है पर शायद गरीब के लिए नहीं। मरियम-वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार 'राष्ट्रवाद साझा मूल्यों की बुनियाद पर खड़ी चेतना के साथ राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रतिबद्धता' है। मंगली यह भावना कहां से लाए। भास्कर टीम के एक 'खोजी अभियान' में दस्तावेजों और कैमरे में कैद सबूतों से खुलासा हुआ है कि राजस्थान से रोजाना हजारों की संख्या में बच्चों की तस्करी होती है, उन्हें बेचने की मंडी लगती है। एनसीआरबी की ताजा रिपोर्ट के अनुसार यह राज्य देश में बाल तस्करी में नंबर एक पर है और यह गोरखधंधा दसियों सालों से पुलिस और सरकारी तंत्र की शह पर चल रहा है। गरीब मां-बाप अपने नौनिहाल को इसलिए बेचता है कि उसे भी खाना मिल जाएगा और वह भूख से नहीं मरेगा। फ्लाईओवर बनाकर या शहर में वाईफाई लगवाकर वोट हासिल करने वाली सरकारें क्या यह सोचती हैं कि इन बेचे गए बच्चों में कोई आइंस्टीन भी हो सकता है अगर उसे पढ़ाया जाए? उन्नाव के बलात्कारी विधायक को सजा देने के साथ जज ने कहा 'सीबीआई ने सत्ताधारी दल के इस बाहुबली के खिलाफ महत्वपूर्ण साक्ष्य दाखिल ही नहीं किए। खौफ इतना था कि इसके भाई ने एक आईपीएस अधिकारी पर सरेआम गोली चलाई, लेकिन कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ'। दिल्ली या सटे गाजियाबाद में मोबाइल लूट लिए जाते हैं और महिलाओं की सोने की चेन झपटमार सरेबाजार लूटकर निकल जाते हैं और पुलिस रिपोर्ट नहीं लिखती। यानी घर से बाहर निकलना मुश्किल है। जरा सोचिए जिस देश में बच्चे मंडी लगाकर बेचे जाते हों, जहां विधायक दुष्कर्म करता हो और शिकायत करने पर पीड़िता के पिता को मार दिया जाता हो, उसे हम अपना 'भारत महान' कहकर खुद को धोखा तो नहीं दे रहे हैं? राष्ट्रवाद के लिए जिन साझा मूल्यों की बात कही गई है क्या वे यही मूल्य हैं? मंगली के कटे पैर क्या इसी महानता की तस्दीक हैं? आज अगर 'भारत महान' बनाना है तो एक नई सामाजिक क्रांति की जरूरत है।

गुजरात ले जा रहे कोटड़ा के 17 बच्चे छुड़ाए, चालक गिरफ्तार

भास्कर न्यूज | उदयपुर

बच्चों को शेल्टर कराया, फिर परिजनों के सुपुर्द

बाल तस्करी पर भास्कर स्टिंग के बाद उदयपुर जिले में पुलिस और अन्य संस्थाएं एक्टिव दिख रही हैं। बीटी कॉटन में मजदूरी के लिए गुजरात ले जाए जा रहे 17 बच्चों को पुलिस ने गुरुवार सुबह कोटड़ा से छुड़ाया और गाड़ी में ले जाने के आरोपी कोटड़ा के कागवा निवासी लक्ष्मण पुत्र रूपा को गिरफ्तार किया है। एसपी कैलाश चन्द्र बिश्नोई ने बताया कि यह बच्चे कोटड़ा से सटे गुजरात क्षेत्र में ले जाए जा रहे थे। अभियुक्त से पूछताछ में सामने आया कि ले जाने वाला लक्ष्मण प्रत्येक बच्चे पर 50 रुपए दलाली लेता है। बच्चों को सुबह ले जाते और शाम को फिर से उनके घर पर छोड़ते हैं।

बच्चों को 200 रुपए दिन की मजदूरी मिलती है जिसमें से 50 रुपए वह लाने-ले जाने के लिए अपने पास रखता है। पुलिस ने गुजरात के मानका पटेल को भी अभियुक्त बनाया है जिसके यहां बच्चों को ले जाया जा रहा था। थानाधिकारी धनपत सिंह ने बताया कि गुरुवार सुबह सूचना मिली थी कि हंसरेटा और वासेला से बीटी कॉटन कपास में मजदूरी के लिए बाल श्रमिकों को गुजरात ले जाया जा रहा है। मामेर चौकी पर नाकाबंदी की। मामेर गांव की तरफ से पिकअप आई। तलाशी ली तो पीछे 17 बच्चे और दो अन्य लोग बैठे थे। बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि लक्ष्मण बीटी कपास के लिए कल भी ले गया था और आज भी वडमगरा में मानका पटेल के खेत में ले जा रहा है। सीडब्ल्यूसी के आदेश पर बच्चों को उनके परिजनों को सुपुर्द किया।

बाल कल्याण समिति अध्यक्ष ध्रुव कुमार चारण से बात कर कोटड़ा स्थित वनवासी कल्याण परिषद में अस्थाई शेल्टर कराया। सीडब्ल्यूसी के आदेश पर बच्चों को उनके परिजनों को सुपुर्द किया। इधर, अभियुक्त लक्ष्मण ने पूछताछ में गुजरात के बडगामरा वडाली निवासी मानका पुत्र कोदर पटेल के कहे अनुसार बच्चों को ले जाना बताया है। बच्चों को रेस्क्यू कर होटल पर चाय पिलाई और इसके बाद बाल कल्याण समिति के निर्देश पर अस्थाई शेल्टर किया गया। अभियुक्त लक्ष्मण को कोर्ट में पेश कर कोर्ट के आदेश पर रिमांड लिया गया।

बच्चों को बदबूदार कमरों में ठूंस रखा था, वहीं सोना, खाना व शौचालय, रेस्क्यू टीम को देखकर छिपाया

भास्कर स्टिंग के बाद मानव तस्करों पर अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई

गुजरात के सूरत से छुड़ाए गए बच्चे।

जयपुर/उदयपुर | मानव तस्करी पर भास्कर स्टिंग के बाद मानव तस्करों पर अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई हुई। उदयपुर की मानव तस्करी विरोधी यूनिट, बचपन बचाओ आंदोलन, राजस्थान बाल संरक्षण समिति, राजस्थान बाल आयोग व श्री आसरा विकास संस्थान की 93 सदस्यीय टीम ने दो दिन तक सूरत में अलग-अलग जगह काम कर रहे नाबालिग बच्चों की रैकी की। रविवार सुबह 5 बजे 134 बच्चों को आजाद कराया गया। बच्चों को गंदे-बदबूदार कमरों में रखा हुआ था। एक कमरे में 10-12 बच्चे रहते थे। उनका सोना, खाना व शौचालय वहीं होता था। रेस्क्यू टीमों को देखकर बच्चों को साड़ियों के बंडलों के पीछे छिपा दिया गया। छुड़ाए गए बच्चों की अगुवानी के लिए राजस्थान बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल भी उदयपुर पहुंची। उदयपुर पहुंचने पर देर रात बच्चों को श्री आसरा विकास संस्थान के ओपन शेल्टर और नारायण सेवा संस्थान के बाल गृह में भेज दिया गया। सोमवार से सभी बच्चों का मेडिकल बोर्ड स्वास्थ्य परीक्षण करेगा। इसके बाद काउंसलिंग होगी और परिजनों को बुलाकर बयान लिए जाएंगे। बयानों के आधार पर बच्चों को गुजरात ले जाने वाले दलालों और गुजरात में काम कराने वाले साड़ी व मिल मालिकों के खिलाफ केस दर्ज होंगे। मानव तस्करी विरोधी यूनिट के इंस्पेक्टर श्याम सिंह ने बताया कि शुक्रवार को सूरत सिटी पहुंचे थे। दो दिन रैकी कर स्थान चिह्नित किए, जहां बच्चे काम करने के बाद रहते थे। कार्रवाई में बचपन बचाओ आंदोलन के ईडी धनंजय टिंगल व मैनेजर मनीष शर्मा, श्री असरा विकास संस्थान से भोजराज सिंह और बाल आयोग के सदस्य शैलेन्द्र पंड्या और बाल कल्याण समिति उदयपुर के जिग्नेश दवे शामिल थे।

मानव तस्करों के साथ जाकर हाथ-पैर गंवाने वाले बच्चों को देंगे कृत्रिम अंग

महावीर विकलांगता समिति आर्थिक सहायता भी देगी

जयपुर | उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर सहित अन्य जिलों में मानव तस्करी का शिकार होकर हाथ-पांव गंवाने वाले बच्चों और महिलाओं को भगवान महावीर विकलांगता समिति की ओर निशुल्क कृत्रिम अंग लगाए जाएंगे। इसके अलावा उन्हें आर्थिक सहायता भी मुहैया कराई जाएगी। दैनिक भास्कर ने 21 दिसंबर से 25 दिसंबर तक स्टिंग के जरिये मानव तस्करी पर अब तक का सबसे बड़ा खुलासा किया। इसमें बताया गया कि किस तरह बच्चों की खरीद-फरोख्त की मंडियां लगती हैं। मात्र 50 से 100 रु. की दिहाड़ी के लिए बच्चों को गुजरात ले जाया जाता है। इनमें से कई बच्चे तो अपाहिज होकर लौटे और कई कफन में लिपटककर। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डीआर मेहता ने बताया कि भास्कर स्टिंग में शामिल हर बच्चे को समिति कृत्रिम हाथ-पैर उपलब्ध कराएगी।

भास्कर के स्टिंग के बाद सीएम का एक्शन

जिन जिलों से बच्चों को गुजरात ले जा रहे, वहां चैकपोस्ट बनाएं, 24 घंटे पुलिस लगाएं : गहलोत

अफसरों को निर्देश देते सीएम।

जयपुर | मानव तस्करी पर भास्कर के खुलासे के बाद सीएम अशोक गहलोत ने सख्ती दिखाई है। उन्होंने उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा से बच्चों को गुजरात ले जाकर श्रमिक के रूप में काम में लेने पर लगाम लगाने के लिए कार्रवाई करने एवं बाल श्रम की समस्या का स्थायी समाधान निकालने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह मुद्दा मार्मिक है और बच्चों को बाल श्रम की ओर धकेलने वाले दलालों के खिलाफ कड़ी व प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सीएम मंगलवार को उच्च स्तरीय बैठक में बाल श्रम के लिए बच्चों के परिवहन पर प्रभावी अंकुश के लिए उठाए जा रहे कदमों की समीक्षा कर रहे थे। सीएम ने गुजरात से लगने वाली तीनों जिलों की सीमाओं पर सघन जांच के लिए चैकपोस्ट लगाने, उन पर 24 घंटे होमगार्ड या पुलिस की तैनाती करने और मुक्त कराए गए बच्चों के प्रभावी पुनर्वास के भी निर्देश दिए। शेष | पेज 8

डीजीपी बोले- महिलाओं और बच्चों के लिए अलग सेल बनेगी

डीजीपी भूपेंद्र यादव ने बताया कि मानव तस्करी को लेकर हर जिले में एक अलग सेल बनेगी जो विशेषतौर पर बच्चों व महिलाओं के मामले देखेगी। सेल का मुखिया उपाधीक्षक स्तर का अफसर होगा।

- राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायाधीश महेश चंद्र शर्मा ने डीजीपी से इस मामले में 17 जनवरी तक विस्तृत कार्ययोजना बनाकर जवाब मांगा है।

भास्कर ने किया था बच्चों की मंडी का पर्दाफाश

23 दिसंबर को प्रकाशित

24 दिसंबर को प्रकाशित

भास्कर ने अलग-अलग दिन स्टिंग की चार शृंखलाओं में बच्चों के खरीद-बेचान, इस काम में शामिल दलालों और पुलिस का क्रूर चेहरा उजागर किया था।

20 हजार तक में बिकता है एक बच्चा, पिता तक पहुंचते हैं बस ₹5 से 7 हजार

बचपन बचाओ
राजस्थान से बच्चों की हो रही तस्करी

134 तो छोटी संख्या, एक माह पहले पता चला- सूरत में फंसे हैं 2000 से ज्यादा बच्चे

फर्स्ट पर्सन
डॉ. शैलेन्द्र पंड्या, संस्थापक, श्री आसरा फाउंडेशन

काफी समय से सूचना मिल रही थी कि ट्राइबल एरिया के बच्चों को गुजरात तथा मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में बॉर्डर पर आने वाले इलाकों में बाल श्रम के लिए लाया जा रहा है। 3 दिसंबर को पता लगाने के हमने टीम बनाई और उनका काम ये था कि इन आसपास के इलाकों में बच्चे कहां से आते हैं। उन्हें कौन लेकर आता है। क्या कोई मीडिएटर है, बच्चे कहां पर रहते हैं। 5 नवंबर को कुछ बच्चों को हम रेस्क्यू कर लेकर आए थे। तभी जानकारी मिली कि राजगुरु ट्रेवल्स की सायरा से सूरत की बस में सामान रखने की जगह पर 25 बच्चों को ठूंसा गया था। उसकी सूचना हमें मिली थी। तुरंत हमने हर जगह नाकाबंदी कराई और बस से उदयपुर सिटी में रेती स्टैंड इलाके से बच्चों का रेस्क्यू किया। बच्चों को शेल्टर होम ले गए और काउंसलिंग के बाद उन्होंने बताया कि 2000 से ज्यादा बच्चों को सूरत में बाल मजदूरी करवाई जा रही है। इसमें 8 साल से 17 साल तक के बच्चे हैं। बच्चों को सुबह, दोपहर, शाम को साड़ी फोल्डिंग, लगेज उठाने, पैकिंग के डिब्बे उठाने जैसे और भी कई काम करवाते थे। ये सारी बात हमने राज्य बाल आयोग के अध्यक्ष को बताई कि ट्राइबल एरिया के बच्चों को इस तरह का काम करा रहे हैं। फिर जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक को इन चीजों से अवगत करवाया। जो आंकड़े हमने प्रशासन के सामने रखे, उन्होंने मानने से इनकार कर दिया। लेकिन, दैनिक भास्कर द्वारा किए गए स्टिंग के बाद बात सुनी गई। जिसके बाद बाल आयोग के निर्देशन में टीम का गठन किया गया। फिर सूरत आकर पिछले 10 दिन में एक-एक बच्चे के घर की लोकेशन ट्रेस की। कहां काम करते हैं, ये सारी जानकारी मिली। जिसके बाद वे रेस्क्यू का प्लान बनाया। पहले हम चार लोग थे। फिर मामला गंभीर लगा। क्योंकि दोनों प्रदेशों में अलग सरकारें भी थी। जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ताओं से बात करने पर उन्होंने अपना पूरा एक पैनल हमारे साथ खड़ा कर दिया। सूरत पुलिस ने अच्छा सहयोग दिया था।

5 नवंबर को सूरत आ रही बस की सीटों के नीचे छिपाकर ला रहे थे 25 बच्चे, पकड़े गए तो हुआ खुलासा

पूणागाम के घरों में चल रहे कारखानों से पकड़े गए 134 बच्चे किन हालात में जिंदगी जी रहे हैं, यह देखकर रूह कांप जाए। एक हॉल, उसी में खाना, काम करना और सोना, बाहर नहीं निकलने देते।

दिन प्रतिदिन ऐसे आगे बढ़ी प्रक्रिया

10 दिसंबर | सर्वे के लिए एनजीओ के तौर पर बचपन बचाओ आंदोलन, श्री आसरा विकास संस्थान, ह्यूमन ट्रैफिकिंग सेल और इन का प्रतिनिधित्व करने वालों को मिलाकर टीम बनाई और टीम ने रेकी कर रिपोर्ट बनाई।

27 दिसंबर | टीम की रिपोर्ट में था कि सूरत के पूणागाम इलाके की इस लोकेशन में बच्चे मिल सकते हैं। जिसके बाद समय गंवाए बिना आगे का रेस्क्यू प्लान किया था।

28 दिसंबर | 20 लोगों की टीम के साथ सूरत आए। टीम में मानव तस्करी विरोधी के इंचार्ज, बचपन बचाओ आंदोलन से जुड़े एक्टिविस्ट थे। जिले की चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के मेंबर भी थे। इसके अलावा 14 पुलिस के जवान थे। इसके बाद गुजरात पुलिस, गुजरात बाल आयोग की मदद ली।

29 दिसंबर | सभी टीमों ने मिलकर आईडेंटिफाई लोकेशन से बच्चों को छुड़वाया।

25 को पकड़ा, लेकिन किसी के खिलाफ मामला दर्ज नहीं

घटना के बाद 25 लोगों को पकड़ा गया था, लेकिन पुलिस ने किसी के खिलाफ अब तक मामला दर्ज नहीं किया गया है। राजस्थान पुलिस की मानव तस्करी विरोधी यूनिट के प्रभारी श्याम चरण सिंह ने बताया कि अभी किसी को आरोपी नहीं बनाया है। सबकी डिटेल्स ले ली गई हैं, अब आगे की कार्रवाई बच्चों के बयान और काउंसलिंग के आधार पर की जाएगी। दो दिन का वक्त लगेगा।

पूरा बचपन निकल गया मजदूरी में

एक 14 साल के बच्चे ने बताया कि पिछले सात साल से मैं सूरत में काम कर रहा हूं, किसी ने मेरी कभी खोज नहीं की थी। एक 11 साल का बच्चा पिछले छह महीने से नौकरी कर रहा था। सारे बच्चों के कम्फर्टेबल होने के बाद ही सभी से पूछताछ होगी। इसके बाद एक-एक बच्चे की एक्सपर्ट्स और काउंसलर के माध्यम से केस फाइल बनेगी और फिर सोमवार को दोपहर दो बजे तक हर बच्चे की स्थिति साफ हो जाएगी।

लाइव रेस्क्यू : पहले ही पता चल गया, सब बच्चों को भगा दिया

सुबह 11 बजे एनजीओ की टीम को पता चला कि पास के ही इलाके में 5 कमरों में 25 बच्चे बंद किए हैं। जिसके बाद पूणा पुलिस और एनजीओ की टीम तुरंत सीता नगर पहुंची। जहां केवल एक बच्चा मिला। उसने बताया कि बाकी बच्चों को भगा दिया गया है। पुलिस इस मामले में एक व्यक्ति को हिरासत राजस्थान ले गई है।

भास्कर इंपैक्ट

दैनिक भास्कर ने लगातार अभियान चलाया, जिसके बाद राजस्थान सरकार ने यह कार्रवाई की।

दो महीने से यहां हूं, बाहर नहीं निकलने देते

एक बच्चे से पूछा गया तो उसने बताया कि उसको यहां नवरतन नाम का व्यक्ति लाया था। जिसने उसके पापा को 5 हजार रुपए दिए थे और हाल में पापा को फिर से काम का पैसे भेजा है। दो महीने पहले ही उसे लाया गया है और बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। उसको उसके दोस्त के कहने पर यहां भेजा गया। राजस्थान के सभी बच्चों को बस से पुलिस राजस्थान लेकर रवाना हो गई । मेडिकल में पता चलेगा कि बच्चों के साथ कोई गलत काम हुआ है या नहीं।

राजस्थान के बाल आयोग की सूरत में हुई कार्रवाई से श्रम विभाग ने लिया सबक

134 बाल मजदूरों को आजाद कराने का मामला

फजीहत हुई तो जागा श्रम विभाग, माना- हमसे बड़ी चूक हुई, अब अभियान चला बचाएंगे बचपन

क्राइम रिपोर्टर | सूरत

रविवार को सूरत के पूणा गाम में राजस्थान के बाल आयोग की टीम, राजस्थान पुलिस और एनजीओ द्वारा 134 बाल मजदूरों का रेस्क्यू करने के बाद श्रम विभाग नींद से जागा और मान रहा है कि उससे बहुत बड़ी चूक हो गई। अब वह बचपन बचाने के लिए टीम गठित करेगा। इसके लिए सूरत सहित पूरे राज्य में अभियान चलाया जाएगा। रविवार को छुड़ाए गए बच्चों को राजस्थान ले जाया गया। राजस्थान की टीम ने 10 दिन तक सूरत में रेकी कर इतनी बड़ी कार्रवाई की, लेकिन यहां के श्रम विभाग को इसकी भनक तक नहीं लगी। विभाग को तो घटना स्थल के बारे में भी पता चला पाया था। अब श्रम विभाग बैठक बुलाएगा। इसमें बच्चों को काम पर रखने वालों के खिलाफ कार्रवाई पर चर्चा की जाएगी। श्रम विभाग के डिप्टी कमिश्नर जीएल पटेल सूरत में रहेंगे और वह शहर में चल रहे बाल मजदूरी की रिपोर्ट देखेंगे। उसके बाद बाल मजदूरी कैसे रोकी जाए इस पर योजना बनाएंगे। बच्चों को रेस्क्यू करने के लिए अहमदाबाद से लेकर वापी तक अभियान चलाया जाएगा। विभाग का कहना है कि बड़ी मुहिम की शुरुआत की जाएगी। किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। इसमें कलेक्टर धवल पटेल से भी मदद ली जाएगी।

बच्चों की काउंसलिंग पूरी, आज रिपोर्ट के बाद होगी एफआईआर

राजस्थान में बच्चों की काउंसलिंग की तस्वीर

राजस्थान बाल आयोग के सदस्य डॉ. शैलेंद्र पंड्या ने बताया कि राजस्थान के सभी 125 बच्चों की काउंसलिंग तथा मेडिकल जांच पूरी हो गई है। मंगलवार तक इसकी रिपोर्ट मिल जाएगी, उसके बाद आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की प्रक्रिया पूरी होगी। सूरत में भी बच्चों की काउंसलिंग पूरी कर ली गई है।

आश्वासनः बाल मजदूरी के बारे में इनपुट मिलने पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी

श्रम विभाग के अधिकारी आशीष गांधी ने माना कि हमसे चूक हुई है, लेकिन इस घटना से सबक लिया गया है। जहां बच्चों से काम करवाने के मामले सामने आएंगे और जहां से भी इनपुट मिलेगा वहां तत्काल कार्रवाई की जाएगी। बता दें कि रविवार को जहां कार्रवाई की गई थी वहां कई वर्षों से बच्चों से काम करवाया जा रहा था। शहर में बड़ी संख्या में चल रहे बाल मजदूरी के अड्डे की भनक श्रम विभाग के किसी अधिकारी को नहीं लगी। अधिकारी तब जागे जब राजस्थान की टीम ने आकर इसका पर्दाफाश कर दिया।

एक्शनः 125 बच्चे राजस्थान भेजे, बाकी के 9 को सूरत के बाल सुधार गृह में रखा

पूणागाम से 134 बच्चों का रेस्क्यू करने के बाद 125 बच्चों को बसों में राजस्थान भेज दिया और बाकी 9 बच्चों को कतारगाम के बाल सुधार गृह में रखा गया है। बच्चों का जब तक कोई अभिभावक नहीं मिल जाता उन्हें बालगृह में ही रखा जाएगा। बच्चों की काउंसलिंग तथा मेडिकल जांच की प्रक्रिया पूरी हो गई है। रिपोर्ट आने के बाद इस एफआईआर दर्ज होगी। 9 में से चार बच्चे झारखंड, चार बिहार और एक उत्तर प्रदेश का है। इनमें से कुछ बच्चे कह रहे हैं कि वे मजदूरी नहीं करते थे।

कुछ बच्चे काम करने तो कुछ घूमने आए थे सूरत

झारखंड के 17 वर्षीय नाबालिग ने बताया कि दो दिन पहले ही वह दुपट्टा फोल्डिंग के काम पर अपनी मर्जी से लगा था, लेकिन पुलिस उसे उठाकर लेकर आई। इसी तरह झारखंड के गिरिडीह जिले से सातवीं कक्षा तक पढ़े 17 वर्षीय नाबालिग ने बताया कि गांव से किशन नाम का व्यक्ति उसे सूरत काम कराने के लिए लेकर आया था। यहां वो ब्लाउज कटिंग का काम करता था जिसके लिए 7 हजार रुपए पगार मिलने वाले थे। एक महीने का पगार मिला था और एक बाकी ही रह गया। बिहार के नवादा जिले से 17 वर्षीय नाबालिग ने बताया कि 19 दिन पहले ही अपने मामा के साथ घूमने आया था। मामा से झगड़ा हुआ था इसलिए वह अपने साथ यह दिखाने सूरत लाए थे कि कितनी मेहनत से काम होता है। वह सो रहा था तो सुबह पुलिस आई और पूछताछ के लिए अपने साथ ले गई। उत्तर प्रदेश के आगरा से 18 वर्षीय नाबालिग ने बताया कि 16-17 दिन पहले ही वह सूरत आया था। अपने बड़े भाई के साथ रहता है और अभी तक तो कोई काम भी नहीं मिला था। पुलिस और बालगृह वाले बड़े भाई की बात नहीं मान रहे हैं। बिहार के सीतामढ़ी के 16 वर्षीय नाबालिग ने बताया कि दो महीने से सूरत में सिलाई का काम करता है। उसकी छह बहन और तीन भाई हैं, इसलिए उसे काम करना पड़ रहा था।

ऑपरेशन कराने आए बच्चे को भी ले गए, कह रहे- कानूनी प्रक्रिया के बाद छोड़ेंगे

बाल सुधार गृह में रखे 9 बच्चों में से एक 17 साल के बच्चे का कहना है कि पुलिस उसे जबरदस्ती अपने साथ ले आई। एम्ब्रॉयडरी में काम करने वाले बच्चे के पिता ने बताया कि उन्होंने अपने बेटे का ऑपरेशन कराने के लिए 20 दिन पहले ही उसे झारखंड के गिरीडीह से सूरत बुलाया था। वह जब नाइट ड्यूटी में गए थे तो पुलिस सुबह 5.30 बजे आई उसे साथ ले गई। वह अपने बेटे से मिलने बाल सुधार गृह में गए तो उन्हें मिलने नहीं दिया गया। उन्होंने अपने बेटे के सारे दस्तावेज भी दिखाए, लेकिन उनकी बात नहीं सुनी गई। कहा गया कि कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही उसे छोड़ेंगे। बच्चे का कहना है कि वह काम करने के लिए नहीं आया था। 10 से 12 तारीख में तनख्वाह मिलती तो वह गांव से अपनी पत्नी को यहां बुलाते।

सीडब्ल्यूसी की मीटिंग आज

कतारगाम के बाल सुधार गृह में काउंसिलर ने बताया कि मंगलवार को चाइल्ड वेलफेयर कमेटी की मीटिंग होनी तय है। इसी मीटिंग में फैसला लिया जाएगा कि बच्चों को झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश के सीडब्ल्यूसी को सौंपना है या सूरत में ही परिजनों को बुलाकर उनके हवाले करना है।

Story 5:

IMPACT

In the biggest joint operation Rajasthan, Gujarat police raid places in Gujarat and rescued 134 kids.

Rajasthan CM calls special meeting on human trafficking, vows strict action.

Special cells set in every district.

Police rescue 134 in Udaipur

Anand Choudhary's extensive investigative reporting and sting operation without bothering his personal safety finally jolted the authorities into action and on Sunday (December 30, 2019) for the first time a massive joint operation by Rajasthan and Gujarat police rescued 134 children from Surat in Gujarat.

Among those rescued, 125 kids belonged to Rajasthan while nine others were from Jharkhand, Uttar Pradesh and Bihar.

The anti-human trafficking unit of Rajasthan police and Gujarat police after doing a recce for two days early morning on Sunday (December 30, 2019) raided the Sitaram Society in the Puran police station area. During the three-hour raid, 134 children were rescued. Children belonging to Rajasthan were sent in three buses to Udaipur while kids from other states were handed over to Surat Child Welfare Board.

Udaipur police superintendent Kailash Chandra Bishnoi said that the early morning raid because during this time they could find all children at one place. He said during the operation many brokers and employers have been identified and after getting more information from children cases will be registered against them and then arrests will follow.

Rajasthan Chief Minister Ashok Gehlot taking serious notice of Anand Choudhary's exposé and at a high-level meeting on child welfare announced stringent measures to check the child trafficking menace. He said check posts will be set up at the borders the three districts share with Gujarat, which will be manned 24 hours by the police or home guards.

He said strict action will be taken against brokers and others involved in child trafficking to find a permanent solution to issue moral and human problem. He announced numerous measures to rehabilitate children, who have been rescued.

In this regard, director-general of Rajasthan police Bhupendra Yadav said a special cell will be created in every district to deal with child and women trafficking, which will be headed by deputy superintendent of police.

It may be mentioned that after Bhaskar team exposed the state administration, police and the

Rajasthan human rights commission have become active. Chief Minister Ashok Gehlot called a high-level meeting of officials of Home, police, Panchayati Raj and labour department.

During the meeting, the chief minister directed the departments concerned to set up special teams at district and state level to curb human trafficking. He also said the workforce of Special Operation Group (SOG) will be given specialised training. It was also mentioned in the meeting that special units to check child and women trafficking are being set up under the police officer of inspector level.

On the other hand. the chairman of the state human rights commission, justice Mahesh Chandra Sharma, taking notice of the Bhaskar sting operation, wrote to DGP to prepare a detailed and comprehensive policy in the regard by January 17.

Meanwhile, due to the impact of Bhaskar sting operation, the police and other related agencies have upped their anti-human trafficking operations.

On 26 December, the Udaipur police rescued 17 children in Kotdwara village, who were being taken to Gujarat to work in BT cotton fields. The broker has been arrested.

SP Kailesh Chandra Bishnoi said children were being taken to the border district of Gujarat and after inquiry, it emerged that the broker Laxman who used to take to Gujarat on Rs 200 daily wages early in the morning and they used to return in the evening. Apart from his Rs 50 commission, Laxman used to charge Rs 50 per child for ferrying them to and fro. In this regard. the police have also booked Manek Patel, the owner of the farm in Gujarat, where children were taken for work. The local child welfare board arranged a temporary shelter for the rescued children, who were later handed over to their parents.